Dr. AMAR KRISHNA
Deptt. of Economics
SRAP College, Bara Chakia

आय में राष्ट्रीय आय की वृद्धि के साथ जोड़ते हुए विश्लेषण किया, जिसे हम जनसंख्या के अनुकूलतम सिद्धान्त के नाम से जानते है। एक ओर प्रो० हैन्सन, स्युडेस, क्लॉक कुरनो है जो जनसंख्या में वृद्धि को आर्थिक विकास में सहायक मानते है तो दूसरी ओर, प्रो० माल्थस, प्रो० बीगर, प्रो० लेविस, विन्ट्रेन, डॉ० ज्ञानचंद आदि है जो जनसंख्या में वृद्धि को आर्थिक विकास के लिए घातक मानते है।

जो लोग जनसंख्या में वृद्धि को आर्थिक विकास के लिए सहायक मानते है वे अपने पक्ष में निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत करते है :-

(i) श्रम-शक्ति की पूर्ति का स्रोत :-

आर्थिक विकास प्राकृतिक साधनों, श्रम शक्ति, पूँजी और तकनीक का फलन है। इसमें श्रम शक्ति ही एक मात्र गतिशील साधन है इसलिए नोबुल पुरस्कार विजेता अमेरिकी अर्थशास्त्री साइमन Kuznets का कहना है कि अन्य बातों को समान रहने पर जनसंख्या की प्रत्येक वृद्धि श्रम-शक्ति को बढ़ाती है।

(ii) बाजारों का विस्तार :-

बढ़ती हुई जनसंख्या बाजारों का विस्तार करती है जिससे विनियोग की प्रेरणा को बल मिलती है।

(iii) उत्पादन में वृद्धि :-

डा० प्राइट सिंह का कहना है, कि जनसंख्या वृद्धि गहन श्रम-विभाजन तथा व्यापक विशिष्टिकरण को जन्म देती है, जिससे तकनीकी प्रगति के द्वारा उत्पादकता में वृद्धि होती है।

(iv) मानवीय पूँजी :→

आज श्रम शक्ति को मानवीय पूँजी के रूप में देखा जाता है। श्रम उत्पादकता में वृद्धि की जा सकती है। जापान इसका उदाहरण है।

(v) नये ज्ञान की खोज :-

नये ज्ञान की खोज जिसे वैज्ञानिकों एवं आविष्कारों के द्वारा होता है, उनकी संख्या जनसंख्या वृद्धि पर निर्भर करती है।

दूसरी ओर प्रो० माल्थस और डार्विन, डॉ० ज्ञानचन्द, प्रो० सिंगर आदि ~~ऐसे~~ है जो जनसंख्या वृद्धि को आर्थिक विकास में बाधक मानते हैं। जूलियन हॉक्सले ने कहा है कि — "Man has become Cancer on the earth". डा० ज्ञानचन्द के अनुसार, भारत जैसे विकासशील देश में बढ़ती हुई जनसंख्या सारे आर्थिक विकास की जड़ में सबसे बड़ी बाधा है। अलक घोष जैसे अर्थशास्त्री के अनुसार, बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण हमारी स्थिति A lice in the Wonder Land के उस घोड़े के समान हो जाती है जो कितनी भी तेज चले दौड़ कर उसी बिन्दु पर चला आता है जहाँ से घुड़दौड़ शुरू हुई थी।

आज बढ़ती हुई जनसंख्या की समस्या भारत एवं एशिया और अफ्रीका के देशों में जन-विस्फोट की समस्या हो चुकी है। संक्षेप में, वे विचारक अपने पक्ष में निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत करते हैं :→

इसलिए कहा जाता है कि विकसित देशों के लिए माल्थस भले ही मर चुके हैं किन्तु उनका भूत आज भी भारत एवं अन्य अफ्रीकी एशियायी देशों की गलियों में घूम रहा है।

(2) आर्थिक विकास का घटना :– बढ़ती हुई जनसंख्या के पोषण के लिए Demographic अवस्था बढ़ता है परिणामस्वरूप आर्थिक विनियोग की मात्रा घटती है। कोल और हूवर के अनुसार सारी बचत Demographic investment में स्वाहा हो जाती है।

(ii) प्रतिव्यक्ति आय पर प्रतिकूल प्रभाव :→ राष्ट्रीय आय की वृद्धि की तुलना में प्रतिव्यक्ति आय में कम वृद्धि के लिए मुख्य उत्तरदायी जनसंख्या में वृद्धि है। उदाहरण के लिए, 1951 से 1991 के बीच भारत के राष्ट्रीय आय में सालाना 3.5% की वृद्धि हुई है जबकि प्रतिव्यक्ति आय में मात्र 1.02 क्योंकि इसी बीच जनसंख्या में वार्षिक 2.48% की वृद्धि हुई है।

(iii) खाद्यान्न पूर्ति की समस्या :– भारत में वर्तमान समय में सालाना डेढ़ करोड़ जनसंख्या में वृद्धि होती है जिसके लिए 5 मिलियन टन खाद्यान्न की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि पिछले 50 वर्षों में खाद्यान्न में तिगुनी वृद्धि के बावजूद भारत आज भी मॉनसून का एक झटका लगने पर कटोरा लेकर विकसित देशों के सामने खड़ा हो जाता है।

(iv) पूँजी निर्माण का कम होना :– विकासशील देशों में जनसंख्या का आकार ही ऐसा होता है कि बच्चों की संख्या अधिक और कमानेवाला कम। उसका ढाँचा पिरामिड की तरह होता है

जैसा कि चित्र ① और ② में स्पष्ट है

Population
Fig-I

Population
Fig-II

(V) राष्ट्रीय उत्पादन में कमी :-

जनसंख्या में तीव्र वृद्धि बढ़ते हुए उत्पादन को रोक लेती है और इस प्रकार, राष्ट्रीय उत्पादन और प्रति व्यक्ति आय में कमी होने लगती है।

(VI) बेरोजगारी का बढ़ना :-

विकासशील देशों में खुली हुई बेरोजगारी के अलावा अर्द्ध-बेरोजगारी छिपी हुई बेरोजगारी आदि का मूल ~~[illegible]~~ बढ़ती हुई जनसंख्या ही है।

(VII) आर्थिक विकास की दर को कम करना :-

प्रो. W.W. Rostow ने अपनी पुस्तक "The Stages of Economic Growth" में कहा है कि — "जनसंख्या स्थिर रहने पर 10 से 12% शुद्ध पूँजी का निर्माण किसी भी देश को take off stage प्राप्त कर लेने के लिए आवश्यक है।" अतः वर्तमान जनसंख्या में वृद्धि पर इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए 32.5% पूँजी का निर्माण होना चाहिए। जो अभी भारत में असम्भव है।

प्रो० लेविस, प्रो० लार्ड विन्सटीन, सेम्स थॉमसन आदि ने जनसंख्या वृद्धि के आर्थिक विकास की प्रक्रिया को विभिन्न चरणों में बाँटकर किया है। उनके अनुसार प्रारम्भिक परम्परागत समाज में जन्मदर और मृत्युदर दोनों अधिक होती है।

आर्थिक विकास के दूसरे चरण में स्वास्थ्य, शिक्षा इत्यादि में सुविधा के कारण हैजा, प्लेग, चेचक जैसी महामारी बहुत हद तक नियंत्रित हो जाती है किन्तु जन्म-दर स्थिर रहता है।

आर्थिक विकास के तीसरे चरण में लोककल्याणकारी राज्य की धारणा के अन्तर्गत स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाएँ सबै सुलभ हो जाती है।

चतुर्थ चरण में शिक्षा एवं उद्योग के विकास के लिए लोग छोटे परिवार के महत्त्व को समझने लगते है। बच्चा पैदा करने में अब लोगों का ध्यान जीवन-स्तर की ओर चला जाता है। फलस्वरूप जन्म-दर में भी गिरावट आ जाती है।

हम उन विद्वान लेखकों के चिन्तन को आगे बढ़ाते हुए उच्च विकास के स्तर पर पाँचवें चरण का विश्लेषण कर सकते हैं। जब रहन-सहन के स्तर को ऊँचा रखने के लिए अविवाहित रहने की परम्परा बढ़ जाती है। फ्रांस की प्रसिद्ध कहावत whether baby or car, औरतें car को पसन्द करती है। तब जनसंख्या बढ़ने के बदले घटने लगती है। यह विकास का अन्तिम चरण होता है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि विध्वंस और नव-निर्माण मानव जाति की कलाकृतियों के दो रूप हैं मनुष्य विश्व के इतिहास का नायक भी है और रचयिता भी है।

वास्तव में हमें यह देखना चाहिए कि जनसंख्या वृद्धि का मनुष्य की सुख-समृद्धि और आर्थिक विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है। इस सम्बन्ध में निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि भारत एवं एशिया, अफ्रीका के अन्य विकासशील देशों में जनसंख्या वृद्धि पर कठोर नियंत्रण होने चाहिए जबकि ~~[illegible]~~ पाश्चात्य देशों में आर्थिक विकास के सन्दर्भ में जनसंख्या वृद्धि अब कोई समस्या नहीं रह गयी है

यदि जनसंख्या बढ़ती रही तो मनुष्य को चांद और दूसरे ग्रहों पर जाने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। हम जानते चाहे एक सीमा के बाद यह धरती अतिरिक्त जनसंख्या का भार वहन करने में असमर्थ हो जायेगी। माल्थस आज भी पूर्णतः अप्रासंगिक नहीं हुए हैं। जूलियन हक्सले के अनुसार "Man has become Cancer on the earth."

आज भी सत्य है